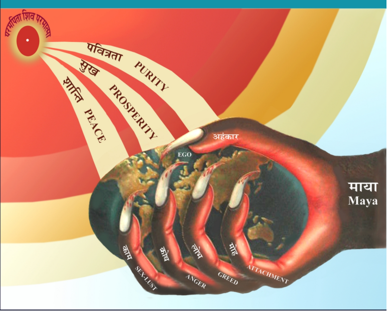

17-05-26 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "अव्यक्त-बापदादा" रिवाइज: 11-02-10 मधुबन

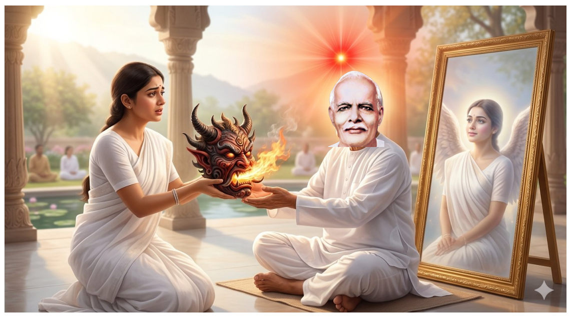

शिव के जन्म दिन पर

क्रोध रूपी अक का फूल बापदादा को अर्पण कर दर्पण बनो,

पवित्र प्रवृत्ति के प्रत्यक्ष प्रमाण द्वारा प्रत्यक्षता को समीप लाओ

पुछो अपने आप से...

आज सभी बच्चे सम्मुख बैठे हुए और देश विदेश में बैठे हुए चारों ओर के बच्चे बहुत खुशी से बाप का और अपना जन्म दिन मनाने की अनेकानेक बधाईयां, मुबारकें दे रहे हैं। आप सम्मुख बैठे हो और दूर-दूर से साइंस के साधनों द्वारा सभी बच्चे खुशी-खुशी से दिल की मुबारकें दे रहे हैं। आप सभी जो भी यहाँ आये हैं वह बाप का जन्म दिन मनाने आये हैं वा अपना भी मनाने आये हैं? क्योंकि यह जयन्ती विचित्र जयन्ती है, क्यों विचित्र

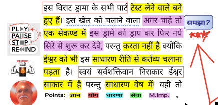

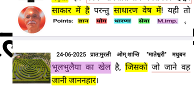

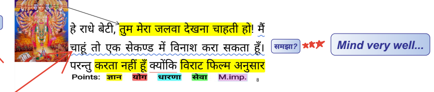

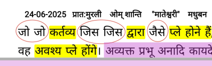

श्रीभगवानुवाच

कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो-
लोकान्समाहर्तुमिह प्रवृत्तः।
ऋतेऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे
येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः॥

श्रीभगवान् बोले—मैं लोकोंका नाश करनेवाला बढ़ा हुआ महाकाल हूँ। इस समय इन लोकोंको नष्ट करनेके लिये प्रवृत्त हुआ हूँ। इसलिये जो प्रतिपक्षियोंकी सेनामें स्थित योद्धा लोग हैं वे सब तेरे बिना भी नहीं रहेंगे अर्थात् तेरे युद्ध न करनेपर भी इन सबका नाश हो जायगा॥ ३२॥ Adhyay-11

१५२ * श्रीमद्भगवद्गीता *

तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशो लभस्व
जित्वा शत्रून्भुङ्क्ष्व राज्यं समृद्धम्।
मयैवैते निहताः पूर्वमेव
निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन्॥

अतएव तू उठ! यश प्राप्त कर और शत्रुओंको जीतकर धन-धान्यसे सम्पन्न राज्यको भोग। ये सब शूरवीर पहलेहीसे मेरे द्वारा मारे हुए हैं। हे सव्यसाचिन्!* तू तो केवल निमित्तमात्र बन जा॥ ३३॥

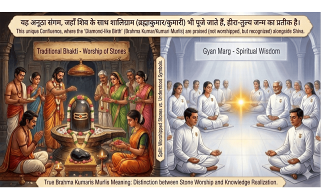

है? बाप और बच्चों की साथ-साथ है। सारे कल्प में ऐसी जयन्ती होती ही नहीं है। सारे कल्प में चक्र लगाके आओ। विचित्र जयन्ती है। तो बापदादा सभी बच्चों से पूछ रहे हैं कि आप सभी बाप को बधाईयां देने आये हो वा बाप से बधाईयां लेने आये हो? बापदादा अकेला कुछ नहीं करता क्योंकि जन्म लेते यज्ञ रचा तो यज्ञ में ब्राह्मण चाहिए। तो आपका भी जन्म बाप के साथ हुआ। इसका यादगार भक्ति में भी शिवरात्रि मनाते हैं तो साथ में शालिग्रामों की भी पूजा होती है। अनेकानेक शालिग्रामों को पूजते हैं। तो यह जयन्ती वन्डरफुल जयन्ती है इसलिए इस जयन्ती को हीरे तुल्य जयन्ती कहा जाता है। तो बापदादा सभी साथी बच्चों को पदम पदमगुणा बांहों के हार के बीच पदम पदमगुणा मुबारक दे रहे हैं। यह भी बाप और बच्चों की अति दिल के प्यार की निशानी है।

How humble my baba is...!

बापदादा का बच्चों से वायदा है कि साथ रहेंगे, साथ चलेंगे। तो बोलो बच्चों का भी बाप से वायदा है ना! कि संगम पर साथ है, साथ-साथ रहना भी है, विश्व सेवा भी साथ में है। रहना भी है साथ में, उड़ना भी है तो साथ में। तो बोलो, आपका भी वायदा है ना कि साथ रहेंगे, साथ चलेंगे और ब्रह्मा बाप के साथ विश्व पर राज्य करेंगे। वायदा है?

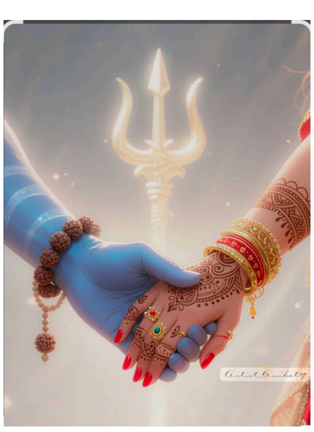

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

पक्का वायदा है? यही विशेषता इस शिव जयन्ती की है।

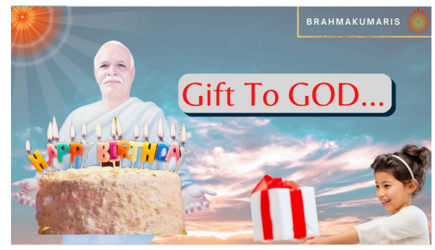

बापदादा ने अमृतवेले से देखा कि भिन्न-भिन्न स्थान के बच्चे बहुत ही खुशी से मुबारक, बधाईयां भेज रहे थे। आप तो अभी सम्मुख बधाईयां दे भी रहे हो और ले भी रहे हो। देना और लेना साथ में है।

चढ़ाओ नशा...

कितने भाग्यवान भगवान के बच्चे हैं जो सम्मुख बर्थ डे मना रहे हैं। सभी के चेहरे खुशनुम: खुशी में उड़ते हुए दिखाई दे रहे हैं। एक तरफ बापदादा बच्चों के भाग्य को देख रहे हैं और दूसरे तरफ भक्तों को भी देख रहे हैं। वह अभी तक पुकार रहे हैं आओ और आप साथ में मना रहे हो।

डूब जाओ इस नारायणी नशे में...

बापदादा ने देखा भक्तों की अनुभूति भी कोई कम नहीं है। जो प्रैक्टिकल में आप कर रहे हो उसका यादगार रूप में कितनी अच्छी विधि से यादगार बनाया है।

आपने व्रत लिया तो उन्होंने भी व्रत का यादगार बनाया है। वह एक दिन या थोड़े समय के लिए व्रत रखते हैं लेकिन आपने कौन सा व्रत रखा है? सभी ने बाप के आगे व्रत रखने का वचन लिया है ना!

पुछो अपने आप से...

आपने बाप से खुशी-खुशी व्रत लिया है कि बाबा

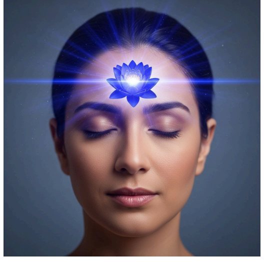

हम इस पूरे जन्म के लिए, ब्राह्मण जन्म के लिए व्रत धारण करेंगे, व्रत धारण किया है ना! कौन सा? पवित्रता का। एक जन्म का व्रत लिया है लेकिन एक जन्म पवित्रता का व्रत 21 जन्म चलेगा। वह थोड़े समय के लिए खाने पीने का व्रत लेते और जागरण का कार्य करते हैं। लेकिन अभी आपके एक जन्म के जागरण से सभी अंधकार से रोशनी में आ गये और यह जागरण भी आपका 21 जन्म चलेगा। अभी आपने ऐसा जागरण किया है जो सारी विश्व आपके जागरण से जागती ज्योति रहेगी। कोई भी दु:ख अशान्ति का अंधकार नहीं रहेगा। तो बोलो, आपने सारे विश्व को अंधकार से रोशनी में लाया है, यह बेहद का व्रत अच्छा लगता है? मेहनत तो नहीं लगती? सहज है वा मुश्किल है? सहज लगता है! जिसको सहज लगता है वह हाथ उठाओ। कभी-कभी मुश्किल नहीं लगता? कभी लगता है? नहीं क्योंकि आप जानते हो कि पवित्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है इसलिए पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं लेकिन मन-वाणी-कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क में भी पवित्रता। पवित्रता के संस्कार सहज धारण करने वाले हो। तो पवित्रता का तो संकल्प किया है लेकिन अभी समय अनुसार बापदादा समय की वार्निंग तो दे रहे हैं। तो जैसे पवित्रता का

Point to be Noted

पुछो अपने आप से...

May I have your Attention Please..!

1
पवित्रता का व्रत

बापदादा हमसे क्या चाहते है?

2
क्रोध पर प्रश्न

3
क्रोध की गिफ्ट

व्रत हिम्मत रख अपना स्वधर्म समझ धारण किया है वैसे जो दूसरा भूत है क्रोध, तो आज बापदादा यह पूछते हैं कि एक महाभूत को तो व्रत लेकर वृत्ति बदली लेकिन दूसरा जो भूत है क्रोध का, क्या क्रोध के भूत पर विजय प्राप्त करना, यह भी संकल्प किया है या दूसरा विकार है इसीलिए छूट है? क्योंकि क्रोध सबके कनेक्शन में आता है। तो आज के दिन, जब भी जन्म दिन मनाते हैं तो एक-दो को गिफ्ट भी देते हैं तो आज बापदादा यह चाहते हैं कि जैसे हिम्मत और बाप की मदद से पहले नम्बर पर मैजारिटी जीत प्राप्त कर चल रहे हैं, क्या ऐसे ही क्रोध पर भी जीत हो सकती है? क्योंकि कोई भी भूत परेशान तो करते हैं और क्रोध का भूत दूसरों के कनेक्शन में आता है, सम्पर्क में आता है। अपने मन में भी जब क्रोध आता है तो खुद भी क्रोध से लाचार होते हैं। तो बाप का बर्थ डे मनाने आये हो, तो आज बापदादा चाहे भारत वा फॉरेन वाले सभी बच्चों से क्रोध की गिफ्ट लेने चाहते हैं। हो सकता है? हो सकता है? जो समझते हैं कि आज के दिन बाप को गिफ्ट में दे सकते हैं, मन में भी नहीं, स्वप्न में भी नहीं, ऐसा अपने को संकल्प रख हिम्मत से आगे बढ़ने की शक्ति है? है?

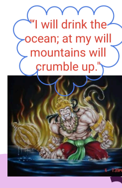

तो बाप के सम्मुख हिम्मत से संकल्प कर सकते हैं? करेंगे और बाप से गिफ्ट लेंगे? गिफ्ट में दो और गिफ्ट लो। अगर क्रोध पर जीत हो गई तो औरों पर (दूसरे विकारों पर) भी जीत प्राप्त करने की हिम्मत आयेगी। तो कौन समझता है कि हम यह गिफ्ट देकर और बाप से गिफ्ट लेंगे? वह हाथ उठाओ। अच्छा, झण्डा हिला रहे हैं। कुमारियां भी! देखना।

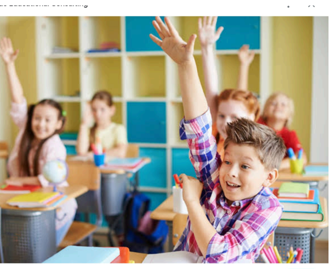

बापदादा को बच्चों की हिम्मत देख बहुत अच्छा लग रहा है। आप सीन देख रहे हो ना! फोटो निकालो फिर हाथ उठाओ। हाँ सभी का फोटो निकालो। बापदादा इस हिम्मत पर आपको रोज़ अमृतवेले जब मिलन मनाते हो उस समय विशेष सहज अनुभवी आत्मा बनने की बधाई देंगे क्योंकि इतने सब अपने-अपने स्थान पर रहते भी जब लोग देखेंगे कि यह इतने रहते हैं, इकट्ठे रहते हैं, प्रवृत्ति सम्भालते हैं, घरबार छोड़के नहीं गये हैं, लेकिन पवित्र प्रवृत्ति बनाई है तो क्या हो जायेगा? जो आप सबके अन्दर शुभ भावना है कि आत्माओं की क्यु लग जाए वह क्यु आपको दिखाई देगी क्योंकि क्रोध प्रत्यक्ष दिखाई देता है। जब प्रैक्टिकल देखेंगे

कि यह तो सिर्फ पवित्रता कहते नहीं लेकिन पवित्र रह करके दिखाते हैं, प्रत्यक्षता चाहते हो तो यह प्रत्यक्ष प्रमाण है इससे सभी आकर्षित होके स्वत: ही आयेंगे। लेकिन सुनायें? आगे सुनायें? क्रोध आने का कारण मैजारिटी देखा गया है कि कहाँ न कहाँ ईर्ष्या और साथ में कुछ भी देख करके चलते हुए वेस्ट थॉट्स का बीज भी क्रोध को लाता है क्योंकि वेस्ट थॉट्स है बीज, इस बीज से क्रोध भी उत्पन्न होता है और इसका एक शब्द निमित्त बनता है, उस एक शब्द के बीज को अगर खत्म किया तो सहज हो जायेगा। वह एक शब्द है 'क्यों', यह क्यों? यह क्यों हुआ? यह क्यों किया? यह क्यों करते हैं? इस 'क्यों' शब्द की बड़ी क्यू है। और देखो क्यू अक्षर इंगलिश में लिखो तो कितना मुश्किल लिखा जाता है और 'ए' लिखो, कितना सहज है। तो बापदादा आज यही चाहते हैं कि इस क्यों शब्द का क्यु खत्म करो। तो जो आप सबकी आश है कि अभी जल्दी-जल्दी बाप की प्रत्यक्षता हो, हर एक की दिल में बाप के स्नेह का फ्लैग (झण्डा) लहरावे और दिल गीत गाये, दिल में गीत गाये "हमारा बाबा आ गया। मीठा बाबा आ गया"। यही चाहते हो ना! कि जल्दी-जल्दी प्रत्यक्षता का झण्डा सबके दिल में

Subtle Point to understand

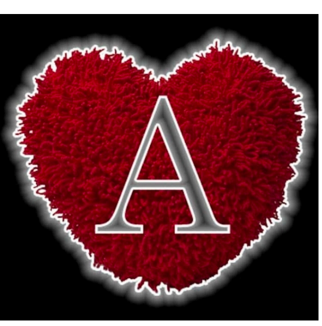

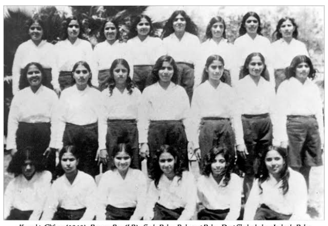

Karachi, Clifton (1940): Bottom Row(LR) - Sarla Behn, Rukmani Behn, Devi Shabz behn, Jashoda Behn, Sandesh Behn, Leela behn. Middle Row (LR): Sati Bholi Behn, Sundari behn, Dadi Atma mohini, Savitri Behn, Dadi Manohar Indra, Gul Gopi Behn, Laxmi Behn. Top Row (LR): Kikni Behn, Dhimlu behn, Gopi Deembi Behn, Dhani Behn, Dadi Hridaypushpa, Bhagwati Behn, Sati behn, Rukmani Behn.

लहराये। तो इसके लिए क्यों, क्या, कैसे होगा, यह कै-कै की भाषा खत्म करके कै बोलना है तो कमाल बोलो। कै-कै नहीं करो। जब बापदादा ने बच्चों का बोर्डिंग खोला, पाकिस्तान की बात है, आदि में तो जगत अम्बा बच्चों को यही कहती थी तो कै-कै की भाषा नहीं करो। कै-कै ज्यादा कौन करता है? वह अच्छा लगता है? तो अभी क्यों क्यों की क्यु नहीं लगाओ। हाँ जी, अच्छा जी, बहुत अच्छा, हम मिलके करेंगे, उड़ेंगे ऐसे बोल बोलो। भाषा का परिवर्तन हो सकता है? कै-कै नहीं, यह क्यु छोड़ दो तो वह क्यु लगेगी।

देखो, शिव के ऊपर अक के फूल ही चढ़ते हैं, तो आज शिवरात्रि मना रहे हो, शिव का जन्म दिन मना रहे हो तो सभी यह क्रोध रूपी अक का फूल बापदादा को अर्पण कर दो तो आप दर्पण बन जायेंगे। पसन्द है ना! पसन्द है? अच्छा। तो अभी होली पर बापदादा आयेंगे, उसमें रिजल्ट लेंगे। थक नहीं जाना। हुआ नहीं, निश्चयबुद्धि होके करो, करना ही है। और हाथ उठाया, हाथ उठाना अर्थात्

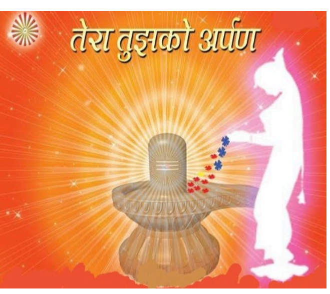

बाप को दे दिया। दिया ना! फिर हाथ उठाओ। देख रही हैं दादियां, देख रही हो? ताली बजाओ। हिम्मत कभी भी नहीं हारना। अगर थोड़ा भी कम हुआ तो आगे के लिए हिम्मत रखके छोड़ नहीं देना। बढ़ते रहना। बापदादा कम्बाइण्ड है, कहते हो ना साथ है, कम्बाइण्ड है। तो ऐसे समय पर अगर कुछ भी हो तो बापदादा कम्बाइण्ड है उसको सामने लाके फिर अर्पण कर दो। लेकिन बापदादा चाहता है कि सभी बच्चे नम्बरवन हो, दी हुई चीज़ अमानत हो गई। हाथ उठाया अर्थात् दिया तो अभी आपका नहीं हुआ। अमानत है। तो अगर संकल्प में भी आये तो समझना अमानत में ख्यानत, यह बुरा माना जाता है। दी हुई चीज़ कभी वापिस नहीं ली जाती क्योंकि मेरी नहीं।

आज बापदादा चारों ओर के जो स्क्रीन में भी देख रहे हैं, वहाँ बैठे सब खुशी-खुशी से देख रहे हैं और संकल्प भी कर रहे हैं, तो मधुबन या सभी सेन्टर क्या बन जायेंगे? क्या बन जायेंगे? सभी सेन्टर्स निर्विघ्न भव के वरदानी बन जायेंगे। पसन्द है ना! पसन्द है? क्योंकि अभी अचानक सरकमस्टांश

Attention..!

दु:ख और अशान्ति के कारण ऐसे बनेंगे जो आप सबको आत्माओं पर रहम आयेगा, क्योंकि आप पूर्वज हो, पूज्य भी हो और पूर्वज भी हो। तो पूर्वज (Definition of) कोई भी आत्मा का दु:ख या डिस्ट्रबेन्श देख नहीं सकते, जिससे प्यार होता है, रहम होता है उसका दु:ख देख नहीं सकते। तो बाप समझते हैं कि समय आपको परिवर्तन करे, इससे पहले आप पुरुषार्थ के प्राप्ति की प्रालब्ध अभी से अनुभव करो क्योंकि आपको सिखाने वाला समय नहीं है, समय आपका टीचर नहीं है। तो बापदादा चाहते हैं कि होली पर हर एक अपनी रिजल्ट लिखे, ज्यादा लम्बा नहीं लिखना, पढ़ने की भी फुर्सत नहीं होती। लेकिन बापदादा ने पहले भी सुनाया कि जैसे आपको वरदान की चिटकी मिलती है ना, कितनी छोटी होती है, उसमें ओ.के. लिखो। ओ.के. शब्द लिखना। अगर आपमें पुरुषार्थ करते कुछ भी हुआ हो तो ओ.के. के बीच में लाइन लगाना। इज़ी है ना! इतना कागज वेस्ट नहीं करना। अगर ज्यादा बार हो, एक बार, दो बार, तीन बार तो लाइन लगाते जाना और होली के पहले मधुबन में भेज देना। भले इकट्ठे करके भेजो, टीचर भेजे। तो बापदादा के पास रिजल्ट पहुंच जायेगी, इसमें नम्बरवन कौन?

Most imp

समझा?

OK!

OK!

Learn Economy From Almighty

OK!

Results

One 1

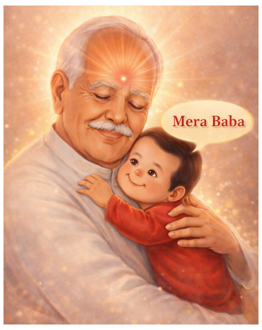

फिर बापदादा आपको पदम पदमगुणा दिल के स्नेह की सौगात देंगे। अच्छा।

डबल फारेनर्स है ना! हाथ उठाओ। नम्बर लेंगे ना! देखेंगे फॉरेन वाले नम्बर लेते हैं या भारत वाले। अच्छा है। बाप-दादा तो सभी को उम्मींदवार नहीं देखते लेकिन बाप के आशाओं को पूर्ण करने वाले बाप के आशाओं के दीपक के रूप में देखने चाहते हैं। अच्छा - **मधुबन** क्या करेगा? मधुबन वाले हाथ उठाओ। नीचे ऊपर सब मधुबन। ऊपर वाले भी हाथ लम्बा उठाओ, हिलाओ। अच्छा। मधुबन को नम्बर तो लेना चाहिए। लेना चाहिए ना! लेना चाहिए क्योंकि मधुबन को सभी बहुत जल्दी कापी करते हैं। अच्छा।

बापदादा हमसे क्या चाहते है?

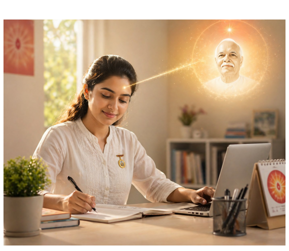

चारों ओर के कम्बाइण्ड रहने वाले देख भी रहे हैं, सुन भी रहे हैं लेकिन सभी जो नहीं भी सुन रहे हैं, वह मुरली द्वारा तो सुनेंगे ही। तो चारों ओर के बाप के स्नेही सहयोगी मीठे-मीठे, प्यारे-प्यारे बच्चों को

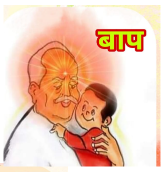

बापदादा पदम पदमगुणा बधाईयां भी दे रहे हैं, मुबारक भी दे रहे हैं और साथ-साथ प्रत्यक्षता का झण्डा जल्दी से जल्दी लहराने का संकल्प भी दे रहे हैं। समय पर नहीं रहो, समय को टीचर नहीं बनाना, जब बाप; बाप, शिक्षक और सतगुरू है तो जैसे आपकी जगत अम्बा ने किया, दो शब्द में नम्बर ले लिया। **बाप का कहना और जगत अम्बा का करना** - ऐसे तीव्र पुरुषार्थ किया और नम्बर लिया। आप सब भी मानते हो ना, तो आप भी फालो मदर जगत अम्बा। अच्छा। सबको यादप्यार और बहुत-बहुत दिल की दुआयें स्वीकार हो। साथ-साथ बाप बच्चों को मालिकपन में देख नमस्ते कर रहे हैं।

जग ने जिनको ठुकराया, पद दलित किया भटकाया
तुमने उन्ही के हाथों इस जग को स्वर्ग को बनाया
ईश मिलन के प्यासों को बाबा तुम खुद आन मिले
बाबा तेरी यादों के दीप हमेशा रहेंगे जले...

बापदादा ने सभी ज़ोन को कहा है कि वारिस और माइक निकालो, प्रभावशाली माइक जिनका अनुभव सुन प्रेरणा आ जाए कि हम भी बनें, किसी को भी सैटिस्फाय कर सकें। तो सभी ज़ोन लिस्ट भेजना। आज बापदादा ने देखा कि देहली वालों ने लिस्ट भेजी है। बापदादा मुबारक दे रहे हैं। तो जब सभी ज़ोन भेजेंगे तो आपको भी रिजल्ट सुनायेंगे

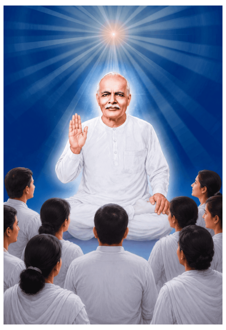

कितने वारिस तैयार हुए हैं। चेकिंग करायेंगे, ऐसे नहीं लिस्ट आई तो मान जायेंगे। गुप्त चेकिंग करायेंगे। अच्छा, आदि में भी मुबारक और बधाईयां मिली, अभी भी बापदादा एक-एक बच्चे का दिल में नाम ले पदम पदमगुणा मुबारक दे रहे हैं। बाप के पास तो सभी बच्चों का चित्र वतन में इमर्ज है। तो बापदादा ने बच्चों का बर्थ डे मनाया और बच्चों ने बाप का बर्थ डे मनाया, दोनों को मुबारक। अच्छा।

Method/Process/ Instrument

Outcome/Output/Result

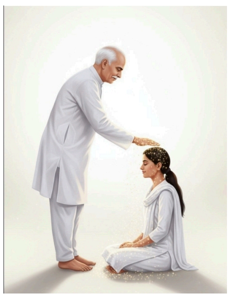

17-05-26 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "अव्यक्त-बापदादा" रिवाइज: 11-02-10 मधुबन

वरदान: सबको रिगार्ड देते हुए अपना रिकार्ड ठीक रखने वाले सर्व के स्नेही भव

Final Achievement

जितना जो सभी को रिगार्ड देता है उतना ही अपने रिकार्ड को ठीक रख सकता है।

दूसरों का रिगार्ड रखना अपना रिकार्ड बनाना है। जैसे यज्ञ के मददगार बनना ही मदद लेना है, वैसे रिगार्ड देना ही रिगार्ड लेना है। ये तो पक्का कर लो..

एक बार देना और अनेक बार लेने के हकदार बन जाना।

वैसे कहते हैं छोटों को प्यार और बड़ों को रिगार्ड दो लेकिन जो सभी को बड़ा समझकर रिगार्ड देते हैं वह सबके स्नेही बन जाते हैं।

Note it down

Example :- मम्मा

इसके लिए हर बात में "पहले आप" का पाठ पक्का करो।

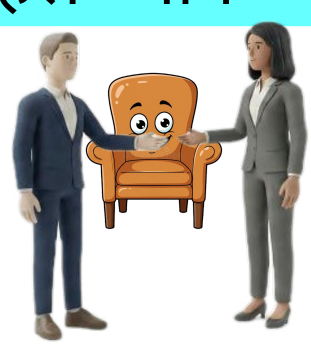

स्लोगन:- बापदादा की मिली हुई शिक्षायें समय पर याद आना ही तीव्र पुरुषार्थ है।

Definition of

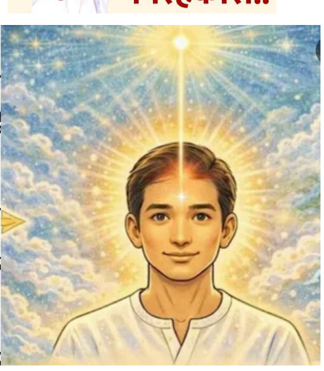

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

ये अव्यक्त इशारे -

सदा अचल, अडोल, एकरस स्थिति का अनुभव करो

जो आलराउण्ड सर्विस करने वाले हैं उन्हें विशेष इस बात का ध्यान रखना है कि कैसी भी परिस्थिति में अपनी स्थिति एकरस रहे तब सफलता मिलेगी।

समझा? Attention Please..!

श्रीमत में जब मनमत, देह-अभिमानपने की मत, शूद्र पने की मत मिक्स करते हो तब स्थिति एकरस नहीं रहती।

Point to ponder deeply...

Subtle Psychology

मन भिन्न-भिन्न रसों में है तो स्थिति भी भिन्न-भिन्न है।

एक ही रस में रहे तो स्थिति एकरस रहेगी।

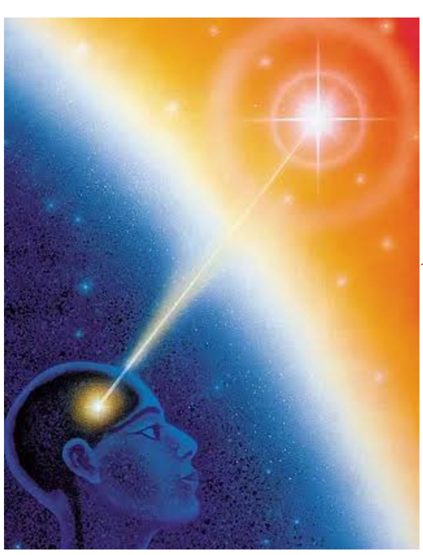

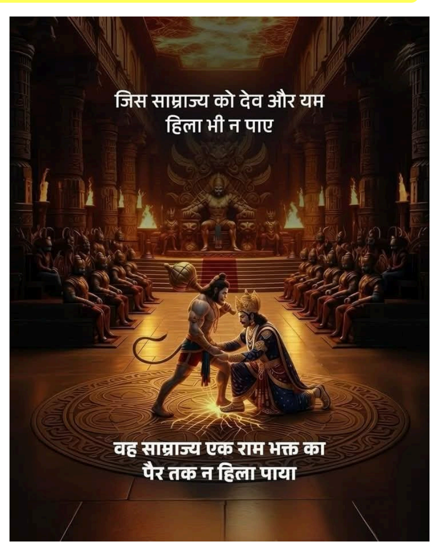

If you wish to stay connected, Here is the link

TELEGRAM

WhatsApp

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans April 26 → Click

All अव्यक्त इशारे April 26 → Click

May I have your Attention Please..!

हम सभी आत्माये इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय में पढ़ रही हैं जहां स्वयं भगवान हमारे शिक्षक है और हम सब बच्चे उनके विद्यार्थी। तो यहां पर हम जो भी कुछ आपके समक्ष रख रहे हैं वह उस परम शिक्षक से हम जो कुछ समझे हैं वो आपके साथ साजा कर रहे हैं इसी शुभ भावना के साथ कि ये आपको आपके पुरुषार्थ में आगे बढ़ाने में मदद करेगा।

लेकिन अगर किसी ब्राह्मण कुल भूषण आत्माको किसी भी बात में ऐसा लगे कि ये बात गलत है या नहीं ऐसा नहीं हो सकता,
तो हमारी आपको दो हाथ जोड़कर नम्र बिनती है कि आप इसको व्यर्थ समझकर अनदेखा व refuse कर दीजिए।
(कुछ उसी प्रकार, जैसे हम कर्मयोगी आत्माएं कर्म करते हर रोज सारे दिन में चाहते या ना चाहते भी कई व्यर्थ बातों को देखती है व सुननी पड़ती है तो हम उसको रात्रि को सोने से पहले मास्टर सर्वशक्तिमान शंकर बन के मीठे बाबा की याद में उसे जला देते या रिफ्यूज करके बाबा को सौंप देते हैं)

हम सभी ब्राह्मणों का लक्ष्य ब्रह्मा बाप समान बनना है जिसका मुख्य आधार है मीठे बाप दादा की मुरली, That's All.

मन मत

माया वास्तव में क्या है
और
कैसे माया को समझ सकते हैं व उसे जीत सकते हैं?

माया को अगर सबसे सरल रीति समझना है तो एक कंप्यूटर प्रोग्रामर जो कि कंप्यूटर की कोडिंग करता है जिसे हम software या Application भी कहते है
और उस कोडिंग को चलाने/Run करने के लिए इलेक्ट्रिसिटी चाहिए तो इन तीनों से माया को ऊपर ऊपर से समझ सकते हैं

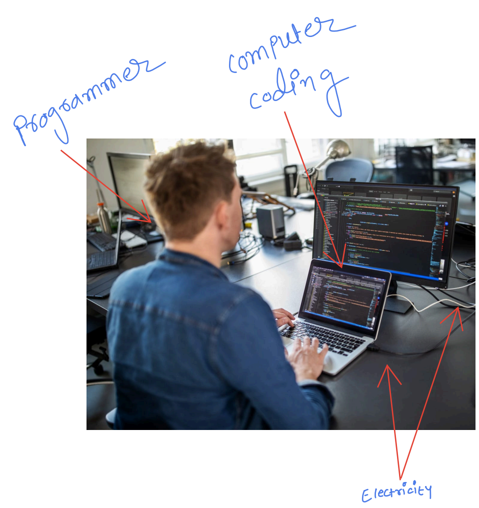

इस बेहद सृष्टि नाटक में सभी आत्माएं चैतन्य एक्टर्स है मीठे ब्रह्मा बाबा इस सारी सृष्टि का coding(नियम सूची) करने वाले वह प्रोग्रामर है इसी कारण से शास्त्रों में ब्रह्मा बाबा को श्रृष्टि के रचयिता या जगत पिता कहा गया है , उसी कोडिंग में ये भी लिखा गया है कि अगर कोई इन नियम को तोड़े तो क्या सजा मिलेगी, और जिसको सजा देने की जिम्मेदारी दी गई है वो है माया(police)
साथ ही जो यह कोडिंग होती है उसको चलाने/रन करने के लिए इलेक्ट्रिसिटी अर्थात ऊर्जा चाहिए वह मिलती है शिव बाबा से
और इसी कारण से शिव बाबा हमेशा ही ड्रामा के बाहर रहते हैं जो की ब्रह्मा बाबा के द्वारा किए हुए coding को निरंतर ऊर्जा प्रदान करते रहते हैं और इसीलिए भक्ति मार्ग में शास्त्रों में परमात्मा को सर्वव्यापी कहा है क्योंकि जैसे किसी सॉफ्टवेयर या प्रोग्रामिंग में इलेक्ट्रिसिटी निरन्तर फ्लो होगी तभी वह प्रोग्राम रन करेगा उसी प्रकार यह सारी सृष्टि जो है उसमें शिव बाबा की ऊर्जा प्रवाहित होती है तो इसी कारण से उन्होंने शिव बाबा को सर्वव्यापी कह दिया है
असूल में/एक्चुअल में शिव बाबा सर्वव्यापी नहीं है किंतु उनकी ऊर्जा सारी सृष्टि में व्याप्त/सर्व व्यापी है और निरंतर/constant है

** This Text are under Updation....

यह माया जो है वह अनंत है
इसको ऐसे समझो:-
1 के बाद 2 आएगा 3 आएगा 4 आएगा उसको आप आगे से आगे लिखते जाओ
लाख, 10 लाख, करोड़, 10 करोड़, अरब, 10 अरब और उससे भी आगे आपको जहां तक गिनती आती हो ......
आपको गिनती आना खत्म हो जाएगा लेकिन नंबर तो उससे भी आगे चलता ही जाएगा अर्थात हमें उस फिगर/अंकों का मूल्य क्या बोलना है वह नहीं मालूम होगा लेकिन वो मूल्य अपना अस्तित्व जरूर रखेगा और वह मूल्य आगे से आगे बढ़ता ही चला जाएगा अनंत तक/♾️ To the Infinity तो इस ही प्रकार से माया भी अनंत है

कोई भी माना कोई भी अपने आप से/अपने बल बूते पर इस माया को पार नहीं कर सकता
वह फिर चाहे मीठे ब्रह्मा बाबा-The creator खुद ही क्यों ना हो ,
जिन्होंने खुद (शिव बाबा के मार्गदर्शन में) इस ड्रामा को रचा - वह खुद भी ड्रामा में श्री कृष्ण बन कर आने से लेकर 84 वे जन्म में जब तक स्वयं शिव बाबा ने उनके तन में प्रवेश नहीं किया तब तक माया को पार नहीं कर सकते

अब सोचो स्वयं ब्रह्मा बाबा(creator) भी शिव बाबा की श्रीमत के बिना उस अनंत माया को जीत नहीं सकते तो हम किस खेत की मूली है जो दूसरी अपूर्ण ब्राह्मण आत्माओं को फॉलो करके माया को जीत सकेंगे...?

और एक अति सूक्ष्म बात यह है की
जिस प्रकार कोई वस्तु महासागर के बीच में डूबी हुई होती है तो उसके चारों तरफ जैसे पानी उस वस्तु को घेरे हुए होता है उसी प्रकार माया हमारे चारों तरफ सर्वव्यापी है और हम आत्माएं अभी माया के राज्य में रहते हैं तो हमारे हर एक संकल्प भी हमें गिराने और चढ़ाने के निमित बनते हैं अर्थात सारा खेल संकल्पों पर है। Every Single Thought is in Account.
जो संकल्प बाप दादा की श्रीमत के विपरीत किया तो वह आत्मा को गिराने के निमित्त बन जाता है, ऐसा नहीं सोचना है कि एक संकल्प ही तो किया है ना इसमें क्या हुआ, किंतु नहीं। हर एक संकल्प account में लिया जा रहा है और उसके परिणाम(अच्छा व बुरा)भी भोगने की हमे तैयारी रखनी पड़ेगी और जो वाणी और कर्म है वह तो बहुत बहुत बहुत बड़ी बात हो जाती है जो अगर हमने श्रीमत के विपरीत ऐसा कोई कर्म कर लिया तो वह हमें कर्म बंधनों में ऐसा तो फंसा देते है की जिससे बाहर निकलना भी कई बार मुश्किल हो जाता है(और फिर ज्ञान से भी कई बार आउट हो जाते हैं जो फिर बाहर जाकर बाबा की और इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय की बुराई करने में लग जाते हैं जिससे वो अपनी पवित्रता की जो भी स्थिति है उससे और ही नीचे गिर जाते है जिसको बाबा "रसातल में चले जाना" कहते है) इसलिए मीठे बाबा कहते हैं की "सभी सब्जेक्ट में फूल पास होना है तो गंभीरता के गुण को धारण करो(मम्मा के जैसे)" - गंभीरता हमारे लिए एक कवच का काम करती है, जिससे वाचा और कर्मणा में हम बच जाते है और फिर अब हमें फोकस सिर्फ संकल्पों पर करना रहता है।

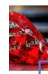

25/03/2025

बाप सर्वशक्तिमान है या ड्रामा? (1) ड्रामा है फिर उनमें जो एक्टर्स हैं उनमें सर्वशक्तिमान कौन है? (2) शिवबाबा। और फिर (3) रावण। आधाकल्प है राम राज्य, आधाकल्प है रावण राज्य। घड़ी-घड़ी बाप

Maya - Ravan is 3rd most Powerful

हमें अपने दुश्मन (माया रावण) को जो है जैसा है उस ही रूप में जानकर हमारे एक-एक कदम(संकल्प तक) आगे बढ़ाने होंगे दुश्मन को जरा भी under estimate करना व कमजोर समझना अर्थात दुश्मन से हार खाना

एक्चुअल में जो मीठे बाबा ने बताये है वही तीन लोक है इससे ज्यादा कुछ नहीं लेकिन आप इसको ऐसे समझे कि programmer के पास जो कंप्यूटर है वह अनलिमिटेड स्टोरेज वाला सुपर कंप्यूटर या quantum computer है तो उसमें असंख्य एप्लीकेशन या सॉफ्टवेयर ऐड करके रन करा सकता है (इसलिए मीठे अव्यक्त बापदादा कई बार कहते हैं कि बच्चे आप पुरुषार्थ तो करो बाबा आपके लिए माला में लड़ियां लगा देगा।क्यों कहते हैं ऐसा क्योंकि बाबा के पास unlimited शक्तियां है - वह जो चाहे वह कर सकते हैं)
ठीक वैसे ही इसको भक्ति मार्ग में असंख्य ब्रह्मांड(multi verse या कहो कि वर्चुअल वर्ल्ड) दिखाएं है(उदाहरण: आजकल face book वाले Meta Verse create कर रहे है जो virtual world है) तो multi verse और कुछ नहीं है वो सिर्फ मीठे ब्रह्मा बाबा के संकल्प की रचना है जिसमें जो मुक्ति में रहने वाली आत्माएं है उन हर एक के लिए पूरी की पूरी virtual/आभासी दुनिया बना दी है जिसमें उन आत्माओं को सच्चा ड्रामा play कर रही हो ऐसा प्रतीत होगा - ये ड्रीम वर्ल्ड जैसा है,जिसमें आत्मा सोती हुई सपने में सब कुछ रियल अनुभव करती है ना - कुछ वैसा ही(Real/सच्चा खेल तो इस साकार श्रृष्टि पर ही खेला जाएगा)- आखिर भी ब्रह्मा बाबा है तो सारी सृष्टि के पिता/जगत पिता ही ना, चाहे कोई उन्हें पिता माने या ना माने लेकिन पिता हमेशा पिता ही होता है, जो बच्चों पर हमेशा रहम दिल होता है चाहे वह सपूत हो या कपूत। और इसीलिए शिव बाबा को भक्ति में अनंत कोटि ब्रह्मांड नायक भी कहते हैं क्योंकि यह जो मल्टीवर्स है उस एक एक ब्रह्मांड में मुक्ति वाली एक एक आत्माएं रहती है और उन सब के मालिक है शिव बाबा।

भक्ति मार्ग में इसीलिए गाते भी है कि

चाहे अमीर हो चाहे गरीब हो उनको एक समान,
सबकी बिगड़ी वो ही बनाये हम सब के भगवान्,
मेरे भोले के दरबार में सबका खाता है।

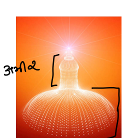

तो मीठे बाबा सभी आत्माओं को जो Reward/सुख देता है वह 100% ही मिले वैसा करते हैं (वो रहम दिल जो है) - इसको हम अपनी अल्पज्ञ बुद्धि चलाने से कभी भी नहीं समझ सकते हैं इसको अगर जानना है तो सबसे पहले अपनी अल्पज्ञ बुद्धि के द्वारा भगवान के सामने तर्क करने के, सारे दरवाजे जो है उसको बंद करने पड़ेंगे ।
मीठे बाप दादा जो बुद्धि वानो की बुद्धि है वह जो कहते हैं उसको ब्लाइंड्ली फॉलो करना पड़ेगा (भगवान के सामने एक संकल्प मात्र का भी तर्क नहीं। सदैव हाँ बाबा, हाजिर बाबा, अभी बाबा - बस इतना ही -That's All) जब उनकी दृष्टि से सारे ड्रामा को देखेंगे तो सब कुछ सहज ही देखने में आ जाएगा।

हाँ, इसमें इतना जरूर है कि जिन आत्माओं ने इस संगम युग पर भगवान की श्रीमत पर माया को बापदादा की मदद से अपने बलबूते पर जीता है वह चारों ही युगों में सर्वश्रेष्ठ पार्ट बजाएंगे। जिसको बाबा कई बार कहते है कि इस अंतिम जन्म में भी कोई ब्राह्मण ऐसा नहीं होगा जिसको दाल रोटी ना मिलती हो।

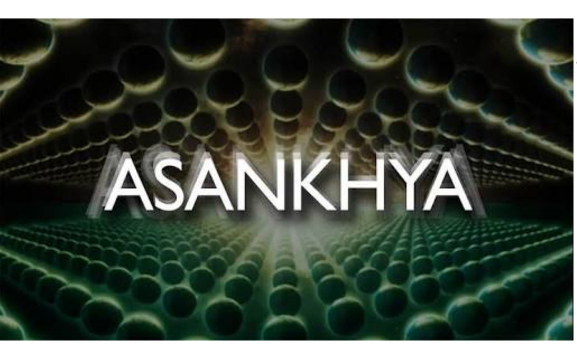

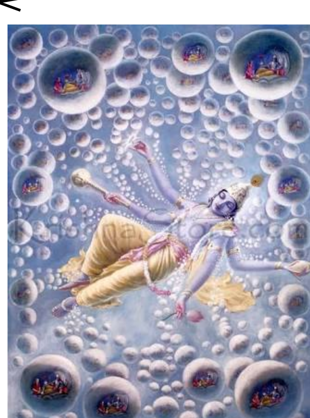

Bible - Gospel of Matthew 20:16 की कहानी

यीशु मसीह ने एक दृष्टांत (parable) सुनाया जिसे “अंगूर के बाग के मजदूरों का दृष्टांत” कहा जाता है।

कहानी

एक ज़मीन का मालिक सुबह-सुबह अपने अंगूर के बाग में काम करने के लिए मजदूरों को बुलाने गया। उसने उनसे एक दिन की मजदूरी तय की।
फिर वह दिन में कई बार बाहर गया:
सुबह 9 बजे
दोपहर 12 बजे
3 बजे
और यहाँ तक कि शाम 5 बजे भी
हर बार उसने और मजदूरों को काम पर रखा और कहा कि उन्हें उचित मजदूरी दी जाएगी।

मजदूरी देने का समय
शाम को मालिक ने सबको मजदूरी देनी शुरू की।

आश्चर्य की बात यह थी कि:
जो मजदूर केवल एक घंटा काम किए थे, उन्हें भी पूरा दिन का पैसा मिला।
और जिन्होंने सुबह से पूरा दिन मेहनत की थी, उन्हें भी उतना ही मिला।

पूरे दिन का पैसा कैसे मिला? It is the missing link

That is by their Efforts/मेहनत

यह देखकर पहले वाले मजदूर शिकायत करने लगे:
“हमने ज़्यादा मेहनत की, फिर भी हमें बराबर पैसा मिला!”

लेकिन मालिक ने कहा:
“मैंने तुम्हारे साथ अन्याय नहीं किया। मैंने वही दिया जो तय हुआ था। अगर मैं दूसरों पर दया और उदारता दिखाना चाहता हूँ, तो इसमें गलत क्या है?”

फिर यीशु ने कहा:
“इस प्रकार जो पीछे हैं वे पहले होंगे, और जो पहले हैं वे पीछे होंगे।” (“So the last will be first, and the first will be last.”)

इस कहानी का अर्थ
यीशु सिखाना चाहते थे कि:
परमेश्वर सब पर अपनी कृपा करता है।
परमेश्वर इंसानों की तरह ऊँच-नीच नहीं देखता।
घमंड और तुलना करना गलत है।
जो लोग दुनिया में छोटे या पीछे माने जाते हैं, परमेश्वर की नज़र में वे महान हो सकते हैं।

मुख्य शिक्षा
परमेश्वर का प्रेम और कृपा केवल मेहनत, पद या समय पर निर्भर नहीं करती, बल्कि उसकी दया और अनुग्रह पर आधारित होती है।

इस कहानी में जो बताया है की ईश्वर या परमात्मा ने सबको एक समान दिया - यह तो बिल्कुल सही है

परंतु ये सिर्फ एक ही पहलू पर बात हुई..
लेकिन इसमें जो सबसे बड़ी Missing Link है वह यह है की
जो सुबह से आए, जिन्होंने मेहनत किया(अर्थात शिव बाबा से श्रीमत लेकर उनके दिखाए गए मार्ग पर त्याग,तपस्या और पुरुषार्थ किया) और मुआवजा प्राप्त किया वह चारों युगों में हमेशा के लिए आगे रहते हैं (golden spoon in mouth) क्योंकि उन्होंने बाबा की मदद से पुरुषार्थ/मेहनत से माया पर जीत पा कर उस मुआवजे को अर्जित किया है न कि मार या रहम से..

और जो पीछे से आए हैं(अर्थात इस संगम युग पर जिन्होंको बाबा एवं बाबा की श्रीमत नहीं मिली है - जिसे मीठे बाबा मुक्ति का वर्सा कहते है) उन्होंने माया को जीता नहीं है सिर्फ इतना ही नहीं उनको तो भगवान क्या और माया क्या है वो भी पता नहीं है तो उनको सजा के बल से(जिसे बाबा कहते है "मोचरा और मानी" - मार खाकर रोटी को पाना) इक्वल मुआवजा मिलेगा

दूसरे शब्दों में, इस संगम पर पूरे कल्प के लिए श्रृष्टि की hierarchy बनती है कि कौन राजा बनेगा और कौन प्रजा..

एक और अति सूक्ष्म बात यहां रख रहे हैं इसको सिर्फ हम बाबा की याद से ही समझ सकते हैं
वह यह है की, अंत में एक्चुअल में बाबा धर्मराज के द्वारा सजा नहीं देते अपितु बाबा उस समय भी रहम दिल होके आत्मा को धर्मराज के द्वारा ऊर्जा देते हैं माया के बाकी रहे हुए चक्रव्यूह से निकलने के लिए
जिस आत्मा ने चक्रव्यूह को पुरुषार्थ से पार नहीं किया वह आत्मा जब धर्मराज की ऊर्जा से चक्रव्यूह से बाहर निकलती है तो उसे अति कष्ट या पीड़ा अनुभव होती है(ये उस रस्सा कस्सी/tug of war के जैसा scene होगा - माया अपनी तरफ खींचती और धर्मराज अपनी तरफ खींचता- और अंत में बापदादा का right hand ही तो विजयी होगा) जिसको ही लोगों ने कह दिया है कि धर्मराज ने सजा दी..
परंतु वास्तव में वह सजा नहीं है, वह भी तो रहम ही है
पीड़ा तो इसलिए होती है क्योंकि उस आत्मा ने (बाबा की श्रीमत अनुसार) अपने पुरुषार्थ के बल से उस चक्रव्यूह को पार नहीं किया।

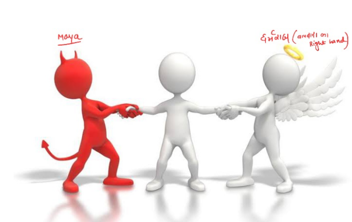

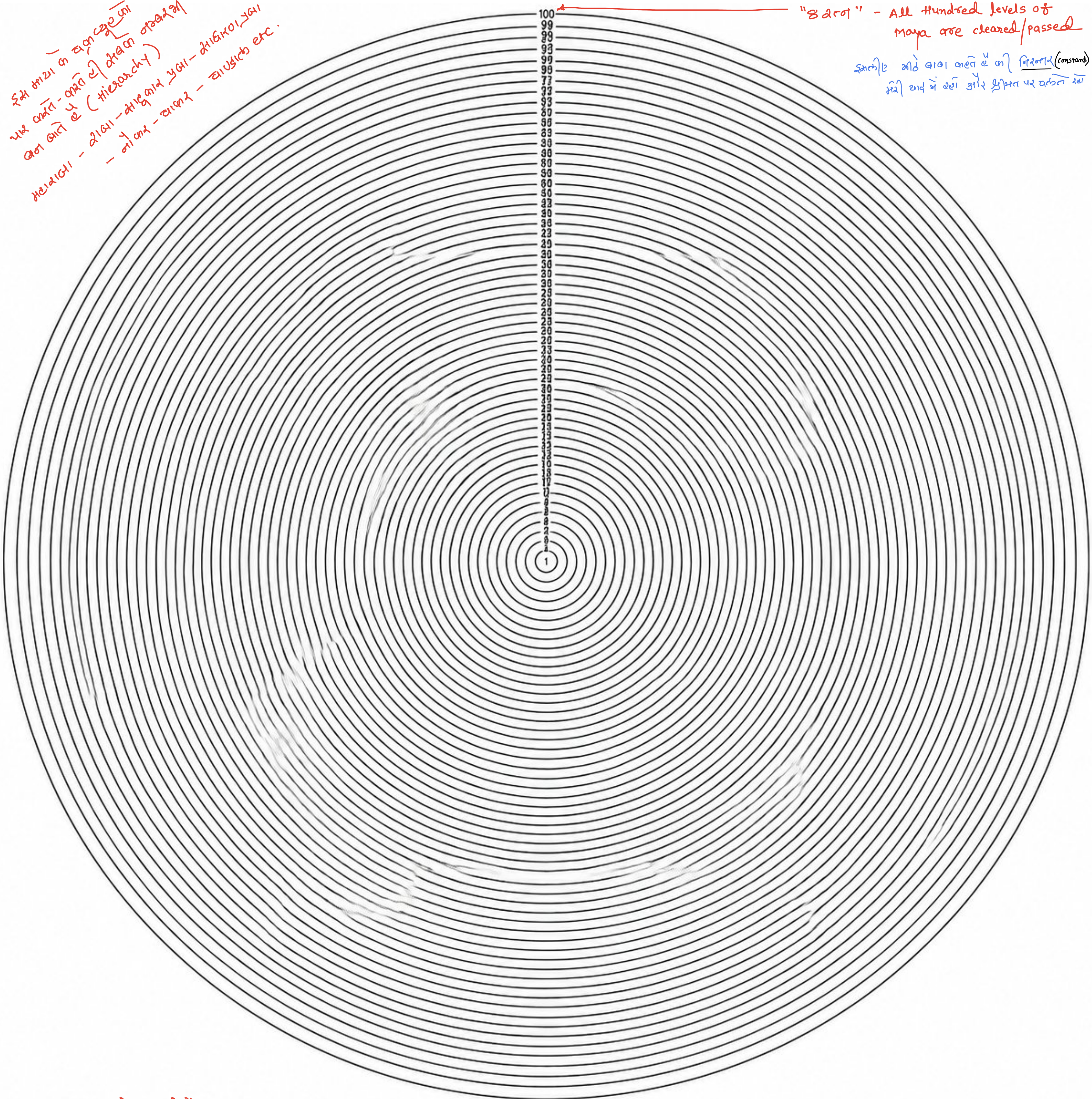

एक उदाहरण से समझते हैं

सिर्फ समझने के लिए यहां माया के Total चक्रव्यूह को 100 सर्कल के रूप में दिखाया हैं
जिसमें जो आत्मा इन 100 सर्कल को(बाबा की श्रीमत के आधार पर अपने पुरुषार्थ से) पार कर लेगी वह pass with honours होगी। जिसे बाबा अष्ट रत्न कहते हैं। जिन आत्माओं को धर्मराज भी झुक कर सलाम करेगा।

अब और एक उदाहरण लेते है,
जो 108 की माला के बाकी के 100 है उन्होंने 99(just समझने के लिए) चक्रव्यूह को पार किया और एक चक्रव्यूह रह गया तो....
उस एक चक्रव्यूह को पार करने के लिए धर्मराज उनको ऊर्जा देगा और उस ऊर्जा से वह एक चक्रव्यूह को पार करेंगे तो जो एक चक्रव्यूह को धर्मराज की ऊर्जा से उन्होंने पार किया (यह जो सीन होगा वह कुछ ऐसा होगा जैसे कि कोई उनको उस चक्रव्यूह से घसीट कर बाहर निकाल रहा हो क्योंकि माया अपनी तरफ खींचती और धर्मराज अपनी तरफ खींचता- अंत में बापदादा का right hand ही तो विजयी होगा) तो इस कारण से उनको उस समय अत्यंत पीड़ा अनुभव होगी जिसे बाबा ने मुरली में कहा है की बाकी के जो 100 है उनको भी कुछ सटके अवश्य पड़ेंगे क्योंकि उन्होंने वो 100वा चक्रव्यूह अपने पुरुषार्थ से नहीं किंतु धर्मराज की ऊर्जा/मदद से पार किया है और वह 100वा चक्रव्यूह उन आत्माओं के लिए कल्प कल्पांतर के लिए Unknown ही रह जाएगा इसीलिए बाबा कहते हैं कि अगर अभी पुरुषार्थ नहीं किया तो कल्प कल्पांतर के लिए प्राप्ति से वंचित हो जाएंगे।

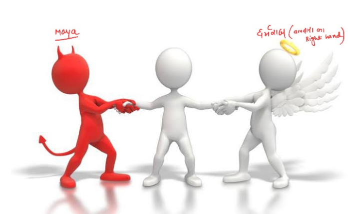

इसी प्रकार सभी आत्माओ के लिए समझ सकते हैं
जैसे किसी ने 30 चक्रव्यूह पार किए हैं तो उनको 70 चक्रव्यूह को धर्मराज की ऊर्जा की मदद से पार करना होगा(फिर से, यह जो सीन होगा वह कुछ ऐसा होगा जैसे कि कोई उनको उस 70 चक्रव्यूह से घसीट कर बाहर निकाल रहा हो) जो उन्हें सजा का अनुभव कराएंगे

फिर से दोहराते है, वास्तव में बाबा धर्मराज के द्वारा यह भी रहम ही कर रहे हैं क्योंकि उनको उस चक्रव्यूह से बाहर निकाल रहे है उसको दूसरे शब्दों में ऐसे कहो कि पावन बना रहे है(क्योंकि माया की अधीनता खत्म हो रही है) परंतु जैसे आगे बताया वैसे इस किस्सेमें चक्रव्यूह को पार करते समय एक second में अनेक वर्षों की पीड़ा का उन्हें अनुभव होगा जिसको शास्त्रों में/गरुड़ पुराण में या और और सभी धर्मो के धर्म शास्त्रोंमें धर्मराज या उन धर्मों के अनुसार जो भी नाम दिया है उनकी सजा के रूप में वर्णित करेंगे द्वापर से...(सजा क्यों,क्या,कैसे... उसका Basic Fundamental सार रूप में तो बस यही है जो हमने समझा)

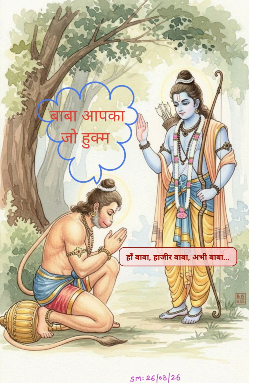

माया को कैसे जाने...?

गीता के 7वें अध्याय के 14 वे श्लोक में यह संपूर्ण स्पष्ट रीति बताया है कि अगर त्रिगुणी माना सतो रजो तमो गुण से निर्मित माया को जानना है तो हमें परमात्मा अर्थात शिव बाबा की शरण में संपूर्ण समर्पण होकर चलना होगा - यही एकमात्र उपाय है

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते॥

क्योंकि यह अलौकिक अर्थात् अति अद्भुत त्रिगुणमयी मेरी माया बड़ी दुस्तर है; परन्तु जो पुरुष केवल मुझको ही निरन्तर भजते हैं, वे इस मायाको उल्लंघन कर जाते हैं अर्थात् संसारसे तर जाते हैं॥ १४॥ अध्याय - 7

दूसरे शब्दों में ...

मेरी दिव्य शक्ति माया, जो प्रकृति के तीन गुणों से युक्त है, पर विजय पाना अत्यंत कठिन है। परन्तु जो मुझमें शरणागत हो जाते हैं, वे इसे आसानी से पार कर लेते हैं।

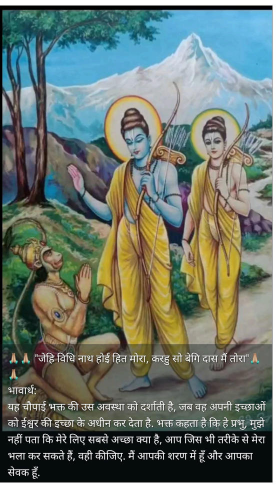

कोई भी मनुष्य आत्मा को अपना आधार नहीं बनाना है।

यह बात कुछ हद तक ठीक है कि जब तक हम ज्ञान में नये होते है तो हमें निश्चय इतना पक्का नहीं होता है तो सिर्फ तब तक हम किसी के क्लास सुने या किसी से ज्ञान योग के लिए कुछ हद तक मदद ले मन मत

लेकिन अगर हमें माया को संपूर्ण रीति जानना है एवं उसके सामने विजयी होना है तो हमारा आधार सिर्फ और सिर्फ शिव बाबा, ब्रह्मा बाबा और मम्मा यह तीन ही होने चाहिए - इससे आगे कोई भी माना कोई भी नहीं

तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत।
तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्॥

हे भारत! तू सब प्रकारसे उस परमेश्वरकी ही शरणमें* जा। उस परमात्माकी कृपासे ही तू परम शान्तिको तथा सनातन परमधामको प्राप्त होगा॥ ६२॥

* लज्जा, भय, मान, बड़ाई और आसक्तिको त्यागकर एवं शरीर और संसारमें अहंता, ममतासे रहित होकर केवल एक परमात्माको ही परम आश्रय, परमगति और सर्वस्व समझना तथा अनन्यभावसे (one & only God) अतिशय श्रद्धा, भक्ति और प्रेमपूर्वक निरन्तर भगवान्के नाम, गुण, प्रभाव और स्वरूपका चिन्तन करते रहना एवं भगवान्का भजन, स्मरण रखते हुए ही उनके आज्ञानुसार कर्तव्यकर्मोंका निःस्वार्थभावसे केवल परमेश्वरके लिये आचरण करना यह 'सब प्रकारसे परमात्माके ही शरण' होना है।

* अध्याय १८ * २३९

दूसरे किसी को भी क्यों फॉलो नहीं करना है।

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥

२४० * श्रीमद्भगवद्गीता *

सम्पूर्ण धर्मोंको अर्थात् सम्पूर्ण कर्तव्यकर्मोंको मुझमें त्यागकर तू केवल एक मुझ सर्वशक्तिमान्, सर्वाधार परमेश्वरकी ही शरणमें[1] आ जा। मैं तुझे सम्पूर्ण पापोंसे मुक्त कर दूँगा, तू शोक मत कर॥ ६६॥ The World Almighty's Guarantee

जो भी आत्माएं हमें माया के बारे में या किसी भी ज्ञान के राज की स्पष्टता के बारे में कुछ भी समझाएंगे उसमें कुछ ना कुछ त्रुटि तो रह ही जाएगी

अब इसमें हम दो उदाहरण लेते हैं

पहला उदाहरण:

मान लो कि एक ब्राह्मण आत्मा जिसको नाम मान शान की कोई भी इच्छा नहीं है उस को 97% या 99% मालूम पड़ चुका है की माया क्या है (100% क्यों नहीं? क्योंकि अभी कोई भी संपूर्ण नहीं बना है ब्रह्मा बाबा के सिवाय और मान लो बन भी गया है तो भी शिव बाबा ने सिर्फ ब्रह्मा बाबा और मम्मा को ही follow करने की श्रीमत दी हुई है)

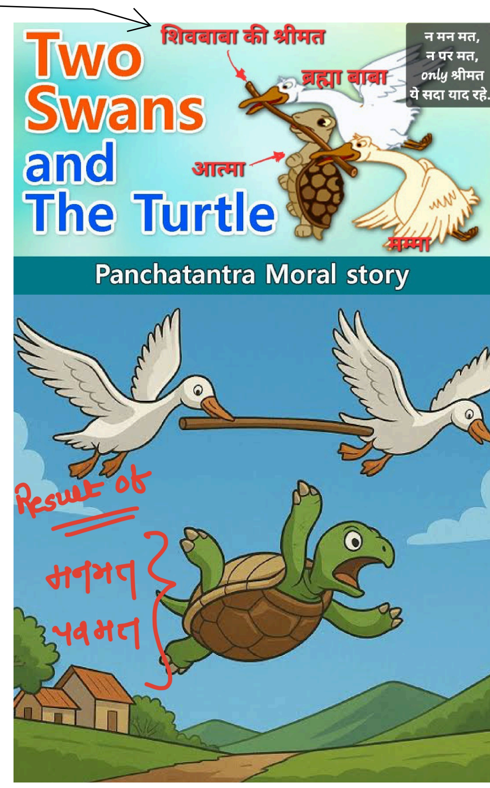

तो अब यह आत्मा आपको अपने सच्चे दिल से निस्वार्थ भाव से आपको जो कुछ भी समझाएगी वह ऐसा होगा जैसे की मान लो कोई 12वीं कक्षा का विद्यार्थी दूसरी या तीसरी कक्षा में पढ़ने वाले विद्यार्थी को मैथमेटिक्स के 12 वीं कक्षा के Problems को समझाता हो जो कि उसने पहली कक्षा से लेकर 11वीं कक्षा तक को अपने बल बूते पर पार करके सब कुछ अर्जित करके अब 12वीं कक्षा में पहुंचा है(उसकी खुद की कमाई)
लेकिन वह दूसरी कक्षा का विद्यार्थी बेचारा उसको कैसे ग्रहण कर सकेगा क्योंकि उसकी बुद्धि वहां तक पहुंची ही नहीं है व पहुंच ही नहीं सकती

दूसरा कि वह जो अपूर्ण ब्राह्मण आत्मा हमें समझा रही है उनकी अपूर्णता अर्थात उनमें जो कमी कमजोरीया है वो साथ में उस आत्मा का नाम रूपभी हमारे अंदर unconsciously transfer होकर घर करती जाती है - फिर उसको निकालने के लिए अलग से मेहनत करनी पड़ेगी और अब हमारे पास समय है कहां....?
साथ ही जब हम उस आत्मा से सुनते हैं तो उस आत्मा की याद ना चाहते हुए भी हमको आ ही जाती है। जबकि हमारा लक्ष्य यह है कि निरंतर एक मात्र शिव बाबा की ही याद रहे। निरंतर का अर्थ है - सदा चलनेवाला।
Constant/ without any break or interruption

और सबसे बड़ी बात
जरा सोचो कि दूसरों को (अपूर्ण ब्राह्मण आत्मा) फॉलो करते-करते अगर यह शरीर छोड़ना पड़े तो अंत मति सो गति क्या होगी?
हमको ऐसा लगता है कि उसमें क्या है - अंत में तो हम बाबा को याद करते ही शरीर छोड़ेंगे
लेकिन नहीं, जो चीज Subconscious Mind में घर कर चुकी होती है उसे निकालना बहुत कठिन होता है इसीलिए मीठे बाबा कहते हैं कि "बहुत काल का अभ्यास ही अंत में काम में आयेगा एवं अंत में किसी भी देहधारी की याद ना हो सिवाय एक बाप के"

तो इसीलिए एक बार थोड़ा सा भी निश्चय हो जाने के बाद हमें मुरली को ही अपना आधार बनाना है

क्योंकि मुरली पढ़ते हैं तो वह मुरली है शिव बाबा और ब्रह्मा बाबा का मन और उनके मन से ही तो यह संपूर्ण ब्रह्मांड/ माया क्रिएट हुई है एवं वह दोनों 100% है तो उनके द्वारा जो भी श्रीमत मिलेगी वह हमें 100% बनाएगी- रिंचक मात्र भी त्रुटि नहीं।

100 % Advantage
in All Aspects

इसीलिए जब हम मुरली पढ़ते हैं तो हमारा मन भी बापदादा के साथ ऑटोमेटेकली ही जुड़ जाता है जिससे कि उनकी याद स्वत: ही रहती है और याद के कारण हमारे विकर्म दग्ध होते है और इसी के चलते हमारी बुद्धि की जो ग्रहण शक्ति है वह बढ़ती है एवं धारणा भी स्वत: ही होती जाती है जिसके अंतिम फल स्वरूप माया को हम संपूर्ण रीति समझ जाते हैं

यह तो दुनिया में भी कहते हैं कि अगर किसी दुश्मन को जीतना है तो सबसे पहले उस दुश्मन की स्ट्रैंथ और वीकनेस - इसको जानना चाहिए अर्थात दुश्मन को जानना चाहिए अगर दुश्मन को जान लिया फिर तो उसको हराना कोई बड़ी बात नहीं।

फिर पुजारी बनते हो। तो पहली बात है, बाप को याद करो। बाप को याद करने का अभ्यास करने से धारणा होगी। एक के साथ प्रीत नहीं है तो फिर और और के साथ लग जाती है। ऐसी-ऐसी
Most imp Subtle Psychology

और यह हमेशा याद रहे की जो हम खुद अपने बलबूते पर कमाते हैं वही साथ में रहता है इसीलिए मीठे बाबा कहते हैं कि अपनी घोट तो नशा चढ़े
किसी के द्वारा दिया गया कुछ भी Temporary/क्षणिक खुशी तो अवश्य देगा लेकिन वह अपनी कमाई नहीं है इसीलिए वह खुशी स्थाई नहीं रहेगी

दूसरा उदाहरण:

आजकल यह दूसरे उदाहरण वाली कैटेगरी की आत्माये ज्यादा देखने में आती हैं जिनको ज्ञान की सच्ची गहराई क्या है वो पता ही नहीं है लेकिन नाम मान शान के चक्कर में (मुझे सब पहचाने, मेरी महिमा करें आदि आदि...) कुछ भी ज्ञान देते रहते हैं जो कि हमें बाबा से दूर करते हैं

अब सोचो कि, उनसे वो अपूर्ण देह अभियान युक्त/मन मत व रावण की दुनियावी परमत मिश्रित ज्ञान हमने लिया तो उसकी result क्या होगी? एक तो हमारे पास already समय कम है और वो अमूल्य समय व्यर्थ चला गया और दूसरा कि वह अधूरा ज्ञान हमको बाबा से/लक्ष्य से ओर ही दूर ले जाएगा

और इतने में ही समय समाप्त हो गया तो...? (चाहे स्वयं का शरीर छूट जाए या विनाश हो जाए - किसी भी रीति से) **Point to ponder deeply...**

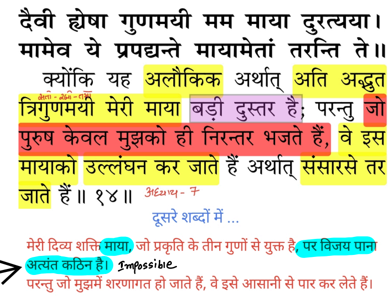
दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते॥
क्योंकि यह अलौकिक अर्थात् अति अद्भुत त्रिगुणमयी मेरी माया बड़ी दुस्तर है; परन्तु जो पुरुष केवल मुझको ही निरन्तर भजते हैं, वे इस मायाको उल्लंघन कर जाते हैं अर्थात् संसारसे तर जाते हैं॥ १४॥ अध्याय - 7

दूसरे शब्दों में ...

मेरी दिव्य शक्ति माया, जो प्रकृति के तीन गुणों से युक्त है, पर विजय पाना अत्यंत कठिन है। Impossible
परन्तु जो मुझमें शरणागत हो जाते हैं, वे इसे आसानी से पार कर लेते हैं।

संपूर्णता की मंजिल तक कौन पहुंच नहीं सकता अर्थात किसको धर्मराज के सामने सर झुकाना पड़ेगा।

जो ब्राह्मण आत्माए भगवान के सामने तर्क देती है वह आत्माए कभी भी संपूर्णता की मंजिल तक नहीं पहुंच सकती फिर चाहे उसको कल्प कल्पांतर का भी समय क्यों ना मिले।
वास्तव में हमारे पास तो यह संगम युग का छोटा सा समय ही है उसमें भी 90 साल से भी ज्यादा समय तो बीत चुका है।

उनमें भी वह ब्राह्मण आत्माएं जो अपनी कमी कमजोरी के कारण/माया का सामना करने में असमर्थ, अपने देह अभिमान वा अहम कार के कारण बाबा जो श्रीमत जिस संदर्भ और जिस भाव से एकदम Crystal clear कर के दे रहे है उस श्रीमत को वैसे का वैसा फॉलो नहीं कर सकती है(माया का सामना करने में अक्षम है)तो वो क्या करती है..?
उस श्रीमत को फॉलो करने के बजाय भगवान को ही, उल्टा उनके सामने, उन्होंने किसी और मुरली में, किसी और संदर्भ से, जो श्रीमत कही है उस श्रीमत का छोटा सा टुकड़ा लेकर स्वयं भगवान को तर्क देकर उस crystal clear श्रीमत को कट करती हैं - अपनी होशियारी/बुद्धिमानी दिखाती है उसे ये पता ही नहीं है कि बाप महाकाल भी हैं।

अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना

May I have your Attention Please..!

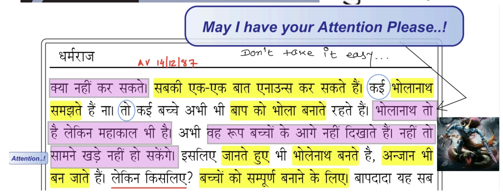
धर्मराज AV 14/12/87 Don't take it easy...

क्या नहीं कर सकते। सबकी एक-एक बात एनाउन्स कर सकते हैं। कई भोलानाथ समझते हैं ना। तो कई बच्चे अभी भी बाप को भोला बनाते रहते हैं। भोलानाथ तो है लेकिन महाकाल भी है। अभी वह रूप बच्चों के आगे नहीं दिखाते हैं। नहीं तो सामने खड़े नहीं हो सकेंगे। इसलिए जानते हुए भी भोलेनाथ बनते है, अन्जान भी बन जाते हैं। लेकिन किसलिए? बच्चों को सम्पूर्ण बनाने के लिए। बापदादा यह सब

Attention..!

अब सोचो, इन आत्माओं को क्या कहेंगे और इन आत्माओं की गति क्या होगी?